

शिक्षा का सामाजिक जीवन में वर्चस्व

निहारिका जैन*

शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है। यह केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं होती, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण, सामाजिक चेतना के विकास, और समाज के संचालन में इसकी अहम भूमिका होती है। शिक्षा ही वह माध्यम है जो व्यक्ति को अज्ञानता से ज्ञान की ओर, अंधविश्वास से तर्क की ओर और पिछड़ेपन से प्रगति की ओर ले जाती है। वर्तमान समाज में शिक्षा का वर्चस्व निरंतर बढ़ता जा रहा है और यह जीवन के हर क्षेत्र में अपनी मजबूत पकड़ बनाए हुए है।

शिक्षा की परिभाषा और उद्देश्य

शिक्षा का अर्थ केवल औपचारिक विद्यालयीन शिक्षा नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के मानसिक, नैतिक, सामाजिक, और व्यावसायिक विकास की प्रक्रिया है। महात्मा गांधी ने शिक्षा को “मानव शरीर, मन और आत्मा का समन्वित विकास” कहा है। इसका उद्देश्य न केवल व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना है, बल्कि समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारियों का भी बोध कराना है।

सामाजिक जीवन में शिक्षा का महत्व

○ 1. व्यक्तित्व विकास में योगदान

शिक्षा व्यक्ति को सोचने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। यह उसके व्यवहार, विचारों, और मूल्यों को प्रभावित करती है। शिक्षित व्यक्ति आत्मविश्वासी होता है और सामाजिक दायित्वों को बेहतर ढंग से निभाता है।

○ 2. सामाजिक समरसता और एकता का संवर्धन

शिक्षा विभिन्न जातियों, धर्मों, और समुदायों के बीच समरसता स्थापित करने में सहायक होती है। यह सामाजिक भेदभाव, जैसे जातिवाद, लिंगभेद, और धार्मिक कट्टरता को समाप्त करने में अहम भूमिका निभाती है। एक शिक्षित समाज अधिक सहिष्णु और उदार होता है।

○ 3. नैतिक मूल्यों का विकास

शिक्षा व्यक्ति को नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी परिपक्व बनाती है। यह उसे सही और गलत का फर्क समझाती है और न्याय, करुणा, ईमानदारी, तथा सहयोग जैसे गुणों का विकास करती है, जो एक आदर्श सामाजिक जीवन के लिए आवश्यक हैं।

○ 4. आर्थिक विकास और रोजगार

शिक्षा से व्यक्ति को न केवल ज्ञान प्राप्त होता है बल्कि यह उसे कौशलयुक्त बनाकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर भी बनाती है। इससे गरीबी, बेरोजगारी, और अपराध दर में कमी आती है। जब समाज के अधिक सदस्य शिक्षित होते हैं, तो पूरा समाज आर्थिक रूप से समृद्ध होता है।

○ 5. लोकतंत्र और नागरिक चेतना का विकास

एक शिक्षित नागरिक अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग होता है। वह भ्रष्टाचार, शोषण, और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाता है और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करता है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

○ 6. नवाचार और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास

शिक्षा व्यक्ति में वैज्ञानिक सोच और तर्कशीलता का विकास करती है। यह समाज को अंधविश्वास, रूढ़ियों, और पिछड़ी सोच से मुक्त करके नवाचार और प्रगति की ओर अग्रसर करती है।

समाज में शिक्षा की भूमिका: ऐतिहासिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य

○ प्राचीन भारत में शिक्षा का स्वरूप

गुरुकुल प्रणाली, वेदों और उपनिषदों का अध्ययन, नैतिक शिक्षा पर बल - प्राचीन भारत में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास था। शिक्षा समाज के विशिष्ट वर्गों तक सीमित थी, जिससे सामाजिक विषमता भी बढ़ी।

○ औपनिवेशिक काल में शिक्षा

ब्रिटिश शासन के दौरान शिक्षा का ढांचा बदल गया। अंग्रेजी शिक्षा ने आधुनिक ज्ञान, विज्ञान और सामाजिक सुधार आंदोलनों को जन्म दिया। राजा राममोहन राय, महात्मा गांधी, और अन्य समाज सुधारकों ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया।

○ स्वतंत्र भारत में शिक्षा का प्रसार

आजादी के बाद शिक्षा को सार्वभौमिक अधिकार के रूप में मान्यता दी गई। सरकार ने शिक्षा को जन-जन तक पहुँचाने के लिए कई योजनाएं चलाई - जैसे सर्वशिक्षा अभियान, मध्याह्न भोजन योजना, और नवोदय विद्यालय योजना।

हाल ही में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत शिक्षा को और अधिक समावेशी, नवाचार-प्रेरित और व्यावसायिक बनाया गया है।

शिक्षा के अभाव से सामाजिक जीवन पर प्रभाव

शिक्षा के अभाव में समाज में कई समस्याएं जन्म लेती हैं:

- अंधविश्वास और कुरीतियाँ: अशिक्षित समाज अंधविश्वासों और सामाजिक कुरीतियों में उलझा रहता है।
- अपराध और शोषण: शिक्षा की कमी से लोग अपने अधिकारों से अनभिज्ञ रहते हैं और आसानी से शोषित होते हैं।
- गरीबी और बेरोजगारी: बिना शिक्षा के व्यक्ति को रोजगार के अवसर नहीं मिलते, जिससे वह गरीबी के चक्र में फँसा रहता है।
- महिलाओं की स्थिति: शिक्षा के बिना महिलाओं को समान अधिकार नहीं मिलते और वे पिछड़ेपन, भेदभाव और उत्पीड़न का शिकार होती हैं।

शिक्षा के माध्यम से सामाजिक सुधार के उदाहरण

- सावित्रीबाई फुले और ज्योतिबा फुले ने महिला शिक्षा को बढ़ावा देकर समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया।
- डॉ. भीमराव अंबेडकर ने शिक्षा को दलितों के सामाजिक उत्थान का हथियार बनाया।
- महात्मा गांधी ने बुनियादी शिक्षा की अवधारणा देकर आत्मनिर्भर समाज की नींव रखी।

आज की चुनौतियाँ और शिक्षा का भविष्य

- 1. शिक्षा की असमानता

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों, धनी और गरीब वर्गों के बीच शिक्षा की पहुँच में भारी अंतर है।

- 2. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव

कई सरकारी स्कूलों में आधारभूत सुविधाओं, प्रशिक्षित शिक्षकों और आधुनिक संसाधनों की कमी है।

- 3. डिजिटल विभाजन

ऑनलाइन शिक्षा के युग में भी बहुत से बच्चे इंटरनेट और स्मार्ट डिवाइसेज़ से वंचित हैं।

- 4. रोजगारोन्मुख शिक्षा की आवश्यकता

आज की शिक्षा प्रणाली को अधिक व्यावहारिक, कौशल-आधारित और रोजगारपरक बनाने की आवश्यकता है।

समाधान और सुझाव

1. शिक्षा तक समान पहुँच: हर वर्ग, लिंग और क्षेत्र के लोगों को समान रूप से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, इसके लिए सरकार को और प्रयास करने चाहिए।
2. शिक्षकों का प्रशिक्षण: अध्यापकों को आधुनिक तकनीकों और शिक्षण पद्धतियों में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
3. समावेशी और संवेदनशील पाठ्यक्रम: ऐसा पाठ्यक्रम जो विविधता, समानता, और सहिष्णुता को बढ़ावा दे।
4. डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा: डिजिटल तकनीक को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाया जाए।
5. व्यावसायिक शिक्षा और उद्यमिता: युवाओं को रोजगार के साथ-साथ उद्यमिता के लिए भी तैयार किया जाए।

शिक्षा न केवल व्यक्तिगत विकास का माध्यम है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन और विकास का सशक्त हथियार भी है। एक शिक्षित समाज ही सशक्त, समतामूलक, और प्रगतिशील होता है। यदि हम समाज में स्थायी शांति, समानता और समृद्धि लाना चाहते हैं, तो शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देना आवश्यक है। शिक्षा के वर्चस्व के बिना कोई भी समाज विकसित नहीं हो सकता।